

श्री मिथिलापुर आनंद आज है प्रघट भई श्री साकेत स्वामिनि ।

फूली फिरे मिठी माय सुनैना देत वाधाई सकल गज गामिनि ॥

मिली मुस्काय हीओं हुलसाय लजावत है सखी कोटिक दामिनि

साई अमां को वाधाई वाधाई

लही आई लाट तां श्री राम जी भामिनि ॥

मातु सुनैना की गोद भरी मन मोद भयो लखि गुण निधि गोरी

अंचल छिपाय लई लपटाय जनक की भामिनि भई मति भोरी ॥

नैननि के नीर सों अपने ही खीर सों लली अन्हवाय भई रस बोरी

जड़ चेतन हूं सब गान करें चिरु जीवो किशोरी किशोरी किशोरी ॥